



सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर

आठवां अंक – वर्ष 2023



भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर





सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर

आठवां अंक वर्ष 2023–24

संरक्षक

प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक

मार्गदर्शक

कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त),
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

संपादक

एस.एम. वैद्य, राजभाषा अधिकारी

कार्यकारी संपादक

राजेश कुमार श्रीवास्तव

पत्राचार का पता

संपादक

ज्ञानशिखर, राजभाषा अनुभाग,
प्रबंध शिखर, भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर
राऊ-पीथमपुर रोड, इंदौर 453556 (म.प्र.)
दूरभाष 0731–2439738



(सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री/कुमारी)

1.	सन्देश – निदेशक	– प्रोफेसर हिमांशु राय	4
2.	मु. प्र. अधिकारी की कलम से	– कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि	5
3.	संपादकीय	– एस. एम. वैद्य	6
4.	वक्त की मांग... जल संरक्षण	– राजेश श्रीवास्तव	7
5.	व्यक्तिगत जीवन और कार्य.....	– भूपेन्द्र कुमार चौहान	9
6.	सड़क का बंटवारा	– असित कुमार सिंह	10
7.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	– शैलेश टटवारे	11
8.	वृष्टि की वाणी	– रुद्रांश कंधारिया	13
9.	संचार के युग में मीडिया की भूमिका	– रुद्रांश कंधारिया	13
10.	“तुम हो अनंत”	– जाह्नवी त्रिपाठी	14
11.	“तुम हो अनमोल”	– जाह्नवी त्रिपाठी	14
12.	माता–पिता का सम्मान	– सत्येंद्र गोंड	15
13.	मेवाड़ के महाराणा	– सार्थक खोडे	16
14.	धैर्य में है समझदारी	– अभिनव बर्वे	17
15.	मैं उनके गीत सुनाती हूं	– श्रीमती जया परिहार	18
16.	कोई लौटा दे वो बीते दिन	– श्रीमती गिरिजा कुमार	19
17.	अनुभवी	– सुश्री अक्षिता	20
18.	मैं अकेला	– युगमनाथ पाठक	20
19.	कामयाबियां	– पंकज जैन	20
20.	संजीवनी – संगीत विद्या	– श्रीमती रंजना चौरे	21
21.	नौ रसों में सराबोर समकालीन प्रबंधन	– डॉ. अनन्या मिश्र	22
22.	जीवन में समय का अभाव..	– प्रवाह शुक्ल	26
23.	24 दिन जिंदगी के	– डॉ. कंचन विश्वकर्मा	27
24.	कुछ लोग	– अन्विका दाश	28
25.	काश ऐसा होता	– भूमिका शर्मा	28
26.	बच्चों के साथ तरोताजा जीवन	– सीमा शर्मा	29
27.	बचपन	– हेमेन्द्र शर्मा	30
28.	मैं बात कहती हूं...	– आयुषी जैन	30
29.	हिंदी भाषा	– सोनिया चौहान	31
30.	आईआईएम इंदौर परिसर में..	– डी. काशी विश्वनाथ रेड्डी	32

(पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के निजी हैं। संस्थान या संपादन मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है)

आईआईएम इंदौर एक झलक

उच्च गुणवत्ता की प्रबंधन शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने, भारतीय प्रबंध संस्थानों की स्थापना, उत्कृष्ट संस्थानों के रूप में की है। यह संस्थान, उद्योगों के साथ शिक्षण, अनुसंधान और विचारविमर्श के लिए, विश्व के श्रेष्ठतम प्रबंधन संस्थानों के रूप में पहचाने जाते हैं।

1996 में स्थापित, आईआईएम इंदौर शासकीय सहायता प्राप्त प्रबंधन स्कूलों के परिवार में छटा है। अपनी स्थापना के बाद से, आईआईएम इंदौर उद्योग, सरकारी-क्षेत्र और सार्वजनिक-क्षेत्र के उपक्रमों के साथ विचार-विमर्श कर, प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहा है। संस्थान शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संरक्षित-पोषित है एवं भारतीय प्रबंध संस्थान अधिनियम 2017 के तहत राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है।

एक मनोरम पहाड़ी के ऊपर स्थित, आईआईएम इंदौर का 193 एकड़ का परिसर, मननशील अध्ययन के लिए, एक आदर्श परिवेश प्रदान करता है। आईआईएम इंदौर में नवीनतम शिक्षण सामग्री, अध्ययन के समृद्ध संसाधन, एक सुदृढ़ सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, अत्याधुनिक खेल संकुल एवं छात्रावासों के साथ-साथ समकालीन आधारभूत सुविधाएं भी हैं।

मिशन

आईआईएम इंदौर सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने वाले, विश्व स्तरीय शैक्षिक मानकों के साथ, एक प्रासंगिक बिजनेस स्कूल होना चाहता है। आईआईएम इंदौर निम्न के लिए प्रतिबद्ध है:-

- प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुसंधान और प्रशिक्षण
- समकालीन भागीदार – केंद्रित शिक्षण और शिक्षण विधियों का प्रयोग
- प्रबंध शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में उपस्थिति



सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्

भा. प्र. सं. इन्दौर

IIM INDORE

लोगो

संस्कृत शब्द सिद्धि मूलम् प्रबन्धनम् में, यह विश्वास निहित है कि, "सभी उपलब्धियों के मूल में प्रबंधन है"। यह चार खंडों में एक चक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। सामूहिक रूप से ये एकल भाग दर्शाते हैं कि, प्रबंधन बहु-आयामी है एवं एकीकृत पूर्णता की रचना करता है। नीले रंग में खंड, वृत्त के तीन चतुर्थांश बनाते हैं जबकि बाहर खुला हुआ चौथा खंड, परिवर्तनीय परिवेश के लिए ग्रहणशीलता को दर्शाता है।

निदेशक की कलम से.....



यह हर्ष का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर की वार्षिक हिंदी पत्रिका ज्ञान शिखर के सतत् आठवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। मुझे गर्व है कि ज्ञान शिखर के माध्यम से मैं आपके साथ संवाद स्थापित कर रहा हूँ। संस्थान देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक व प्रभावी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों एवं उद्यमियों को विकसित करने में संस्थान विश्वस्तरीय शिक्षण मानकों के साथ एक प्रासंगिक व्यावसायिक प्रबंध संस्थान है जहां व्यावसायिक एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्चस्तरीय शिक्षा प्रदान की जाती है।

हम एक विचारशील समुदाय का हिस्सा हैं, जो नई परिभाषाएं गढ़ने, नए शिखर छूने और नई दिशाएं देखने हेतु अग्रसर है। मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि हमारा संस्थान अपार संसाधनों, अद्भुत शिक्षा द्वारा युक्त एक संरचित वातावरण एवं आदर्शवादी नीतियों के साथ एक अद्वितीय स्थल है। यहां हर छात्र को नई सोच को बढ़ावा देने और अपने सपनों को प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है। ज्ञान शिखर पत्रिका न केवल हमारी भाषा का संरक्षण करती है, बल्कि हिंदी साहित्य, सामाजिक ज्ञान एवं विचारधारा को भी अग्रसारित करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारे दायित्वों को परिलक्षित करता है। मैं आशा करता हूँ कि ज्ञान शिखर संस्थान के सदस्यों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति हेतु एक उपयुक्त साधन सिद्ध होगा। मैं संपादकगण एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

प्रोफेसर हिमांशु राय

मुख्य अधिकारी प्रशासन की कलम से ...



मुझे भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर के राजभाषा विभाग के सतत प्रयत्नों की प्रतीक, वार्षिक हिंदी पत्रिका "ज्ञान शिखर" का आठवां अंक प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। संस्थान के समुदाय सदस्यों की सृजनात्मकता को मूर्त रूप देने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

'ज्ञान शिखर' पत्रिका के इस आठवें संस्करण को सफलतापूर्वक प्रकाशित करने में आप सभी के अपार सहयोग के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। यह पत्रिका अद्यतित ज्ञान एवं सृजनात्मकता को प्रतिध्वनित करती है। निरंतर प्रकाशित हो रही हमारी पत्रिका 'ज्ञान शिखर' आज लेखन और कला की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। इस पत्रिका के माध्यम से हमने हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित देने का प्रयत्न किया है।

मेरा मानना है कि विचार व्यक्ति के अस्तित्व की पहचान है, और वैचारिक निरंतरता से ही हमारा जीवन चलायमान है। अपने वैचारिक प्रवाह को जारी रखते हुए हमें निरंतर अग्रसर रहना चाहिए, क्योंकि इससे ही हमारे उद्देश्य पूर्ण होंगे।

पत्रिका में संस्थान के समुदाय सदस्यों ने अद्वितीय रचनात्मकता से अपने बहुमूल्य विचारों को व्यक्त किया है। मैं सभी लेखकों की अभिव्यक्ति की सराहना करता हूँ और ज्ञान शिखर के संपादकों को बधाई देता हूँ।

जय हिंद!

शुभकामनाओं सहित,

कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि
(सेवानिवृत्त)

संपादकीय



ज्ञान शिखर पत्रिका का 8वां अंक प्रस्तुत करते हुए मैं आप सभी को विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ। इस वर्ष हमने पुनः विभिन्न ज्ञान और विचार के शिखर प्रस्तुत किए हैं, जो हमारे संस्थान समुदाय सदस्यों के उत्कृष्ट योगदान को प्रकट करते हैं।

ज्ञान शिखर पत्रिका के माध्यम से हम न केवल शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में विकास कर रहे हैं, बल्कि राजभाषा के क्रियान्वयन में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। आप सभी का साथ और प्रतिबद्धता हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है और हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस पुनीत अवसर पर, फिर से आप सभी को धन्यवाद देते हुए, मैं आप सभी की समृद्धि और उत्कृष्टता की कामना करता हूँ। हमारी पत्रिका को अगले वर्षों तक सफलता और प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने के लिए आपके साथ जुड़े रहने की कामना करता हूँ।

निदेशक महोदय के कुशल नेतृत्व एवं मुख्य अधिकारी प्रशासन के मार्गदर्शन में पत्रिका के सतत प्रकाशन हेतु मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। मैं श्री राजेश श्रीवास्तव जी का भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु निरंतर प्रयासरत रहे हैं। समुदाय के सहयोग और समर्थन के बिना, इस पत्रिका को प्रकाशित करना संभव नहीं था।

एस. एम. वैद्य

वक्त की मांग... जल संरक्षण



राजेश श्रीवास्तव
कार्यकारी संपादक

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस की पंक्तियां **जल थल पावक गगन समीरा, पंच तत्व यह रचित शरीरा** हमें बताती हैं कि हमारे शरीर के साथ हमारी सृष्टि का निर्माण भी इन्हीं पांच तत्वों अर्थात जल, थल, वायु, अग्नि एवं आकाश से हुआ है। जैसा कि हम जानते हैं इनमें से यदि एक भी तत्व को हटा दिया गया तब क्या होगा? इसकी कल्पना मात्र से ही आत्मा कांप जाती है!

हम सभी भली भाँति जानते हैं कि पेयजल हमारे लिए कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण है फिर भी सिर्फ अपने छोटे से उद्देश्य या स्वार्थ की पूर्ति हेतु हम पेय जल की अनावश्यक बर्बादी जाने-अनजाने करते रहते हैं। स्वच्छ और पेयजल का व्यर्थ बहाव न करते हुए उसको सुनियोजित रूप से उपयोग करना ही जल संरक्षण कहलाता है।

जल संरक्षण का महत्व

भारत के कई बड़े शहरों में जहां औद्योगीकरण हुआ है, वहां की सबसे खास बात यही है कि वहां जल एवं वायु दोनों पर ही विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे वायु प्रदूषित होने लगती है और भूमिगत जलस्तर नीचे जाने लगता है।

कुछ वर्ष पहले की ही बात है जब लोग बोलते थे कि एक वक्त ऐसा भी आएगा जब दुकानों से पानी भी पैसों में मिला करेगा और लोग इसे खरीद कर पिया करेंगे और यह बात सच भी हो गई लेकिन इतनी जल्दी इतना सब कुछ होगा इसका अंदाज शायद हमें भी न था।

जल संरक्षण क्यों आवश्यक है चलिए इन बिंदुओं पर चर्चा करते हैं :

1. जिस प्रकार बड़े शहरों में पेयजल बिकता है उसका सबसे अहम कारण है पेयजल की कमी और यदि ऐसे ही चलता रहा तो वह वक्त अब ज्यादा दूर नहीं कि जमीन से पानी निकालना भी हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा और पेयजल की मात्रा में भारी गिरावट होने लगेगी इसलिए जरूरी है जल का संरक्षण किया जाए।
2. यदि खेतों की सिंचाई के लिए पानी ही न होगा तो, हमारे फल, हमारी सब्जियां, खाद्यान्न, तिलहन जिनका हम उपभोग करते हैं, इनकी पैदावार कम होगी जिससे भुखमरी के हालात उत्पन्न हो जाएंगे, अतः इस स्थिति को रोकने के लिए जल संरक्षण नितांत आवश्यक है साथ ही वर्तमान समय की मांग भी है।
3. पेयजल की कमी से लोग इसका उपयोग कम करेंगे और शुद्ध पेयजल ना होने से बीमारियां पनपना शुरू हो जाएंगे और धीरे-धीरे यह बड़ी महामारी का रूप लेंगी, इसलिए जल संरक्षण अपरिहार्य है।
4. भूमिगत जलस्तर घटने से धरती की उर्वरक क्षमता कम होने लगेगी और धीरे-धीरे करके चटकना या दरकना शुरू कर देगी जिससे कि भूकंप जैसे हालातों को बढ़ावा मिलेगा।

5. जैसा कि हम जानते हैं वायुमंडल का तापमान लगातार बढ़ रहा है और कई शहरों में तो जाड़ों के मौसम में भी गर्मी के हालात रहते हैं, ऐसे में अगर पानी की कमी आती है तो मानव और जानवर दोनों ही गर्मी से बुरी तरह झुलसने लगेंगे। इन सभी परिस्थितियों के लिए मानव स्वयं ही जिम्मेदार है, जो पहले अपने स्वयं के लिए और साथ ही दूसरों के लिए मुसीबत पैदा कर लेता है और बाद में उसका हल निकालने के लिए अपने आप को बुद्धिमान साबित करने में लगा रहता है।

शहरीकरण और औद्योगीकरण दोनों ही इसमें अहम जिम्मेदारी रखते हैं, क्योंकि किसी भी फैक्ट्री या कारखाने के लिए जल की आवश्यकता बहुत अधिक मात्रा में होती है लोगों ने पहले से ही यह नहीं सोचा था कि जमीन के नीचे भी पानी का स्तर कम हो सकता है और उन्होंने फैक्ट्री कारखानों के लिए सीधे भूगर्भ से ही पेयजल का दोहन शुरू किया।

बाकी बची कसर घरों से पूरी हो गई क्योंकि कहते हैं कि बूंद-बूंद से पूरा घड़ा भर जाता है तो ऐसे ही जिन घरों में सबमर्सिबल पंप लगे हुए हैं वे लोग तो यह समझते हैं जैसे कि पूरी दुनिया का पानी मानों उन्होंने ही खरीद लिया हो और बेझिझक जितना मर्जी हो बहाओ।

जब से किसान खेतों में रासायनिक उर्वरक का उपयोग करने लगे हैं तब से खेतों में भी पानी दूषित हो कर जमीन के नीचे चला जाता है जो अनेक बीमारियों का कारण बनता है।

जल का संरक्षण अथवा बचाव किस तरह किया जाए?

प्रथम कारखानों और फैक्टरी के लिए शुद्ध पेयजल का उपयोग करना बिल्कुल बंद कर दें और साथ ही सरकार भी इसके लिए ठोस कदम उठाए।

द्वितीय बिंदु है फैक्ट्री से निकलने वाले गंदे पानी जो रासायनिक क्रियाओं से होकर गुजरते हैं उसकी निकासी के लिए पर्याप्त एवं यथोचित इंतजाम करें, जिससे वह साफ पानी से मिलकर उसे गंदा न कर सके।

तीसरा बिंदु है रासायनिक उर्वरक की जगह किसानों को जैविक एवं कंपोस्ट खाद का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें, जो कि जल प्रदूषण का एक बड़ा हिस्सा वहन करता है।

चतुर्थ बिंदु है सार्वजनिक स्थलों पर लगाई गई पानी की टंकियों को भी स्वचालित करना चाहिए ताकि शुद्ध पेयजल की बर्बादी होने से बच सके।

घरों में सबमर्सिबल पंपों को भी लगाने की इजाजत न दी जाए और जिनके घरों में ये पंप लगे हैं, उनके लिए स्वचालित तरीके से पूरे दिन के लिए पानी की सीमा तय कर देनी चाहिए जिससे कि जल का दुरुपयोग होने से बचाया जा सके।

अंतिम एवं महत्वपूर्ण बिंदु है वर्षा के जल का संरक्षण, जो कि बहुत ही कारगर सुझाव हो सकता है वर्षा के पानी को इकट्ठा कर, अपने घरों के कामों में आसानी से ले सकते हैं, जैसे कि घर की सफाई, कपड़ों की धुलाई आदि। 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' द्वारा हम वर्षा के जल को भूमिगत संरक्षित कर सकते हैं, जो कि एक अत्यंत ही प्रभावी एवं सार्थक उपाय है।

मानव को उन सभी पंचतत्वों का सम्मान करना होगा जिन पर कि हमारी सृष्टि आधारित है, जल एवं वायु के प्रति जागरूक होने के साथ-साथ मानव को अपनी बुद्धिमत्ता का भी परिचय देना होगा। कवि रहीम की इन अनमोल पंक्तियों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ **"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून"**।

व्यक्तिगत जीवन और कार्य जीवन के बीच संतुलन कैसे प्रबंधित करें।



भूपेंद्र कुमार चौहान
एकजीक्यूटिव असिस्टेंट

व्यक्तिगत जीवन और कार्य जीवन संतुलन एक ऐसा विषय है जिस पर हाल के दिनों में काफी ध्यान दिया गया है। यह शब्द किसी के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन को दर्शाता है। जीवन के इन दो पहलुओं के बीच संतुलन हासिल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर आज की तेजी से भागती दुनिया में। बहुत से लोग डरते हैं कि वे एक या दूसरे को खो देंगे, जिससे तनाव, चिंता और अवसाद भी हो सकता है। हालांकि, सही दृष्टिकोण के साथ, इस डर को दूर करना और जीवन और कार्य के बीच एक स्वस्थ संतुलन हासिल करना संभव है।

कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देना है। आपको यह पहचानने की जरूरत है कि आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है और उसके अनुसार अपना समय आवंटित करें। इसका मतलब यह हो सकता है कि परिवार, दोस्तों, शौक, व्यायाम और अन्य गतिविधियों के लिए अलग समय निर्धारित करना जो आपको खुशी देते हैं। अपने काम के लिए यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना भी आवश्यक है और अपने आप को प्रतिबद्ध करने से बचें। यह आपको बर्नआउट से बचने में मदद करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि आपके पास अपने जीवन के अन्य पहलुओं के लिए पर्याप्त समय है।

जीवन के एक पहलू को खोने के डर को दूर करने का एक और तरीका है, माइंडफुलनेस का अभ्यास करना। माइंडफुलनेस में पल में मौजूद रहना और आप जो कुछ भी कर रहे हैं उसमें पूरी तरह से शामिल होना शामिल है। जब आप काम पर हों, तो अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करें और कोशिश करें कि व्यक्तिगत मुद्दे आपको विचलित न होने दें। इसी तरह, जब आप अपनों के साथ समय बिता रहे हों, तो अपना फोन दूर रख दें और उन्हें अपना पूरा ध्यान दें। सावधान रहकर, आप इस बात की चिंता किए बिना कि आप क्या खो रहे हैं, हर पल का आनंद उठा सकते हैं।

अपने नियोक्ता और प्रियजनों के साथ अपनी आवश्यकताओं और सीमाओं को संप्रेषित करना भी महत्वपूर्ण है। यदि आपको व्यक्तिगत कारणों से छुट्टी चाहिए, तो बात करें और पहले से व्यवस्था कर लें। इसी तरह, यदि आपके पास काम की समय सीमा है, तो अपने परिवार को बताएं ताकि वे इस दौरान आपका समर्थन कर सकें। अपनी आवश्यकताओं और सीमाओं को संप्रेषित करके, आप अभिभूत महसूस करने से बच सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर कोई एक ही पृष्ठ पर हो।

अंत में, शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से अपना ख्याल रखना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब है पर्याप्त नींद लेना, स्वस्थ आहार खाना और नियमित व्यायाम करना। इसका मतलब अपने लिए आराम करने और रिचार्ज करने के लिए समय निकालना भी है। चाहे वह किताब पढ़ रहा हो, बबल बाथ ले रहा हो, या टहलने जा रहा हो, कुछ ऐसा करना सुनिश्चित करें जिससे आपको खुशी मिले और आपको आराम मिले।

अंत में, कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही दृष्टिकोण से यह संभव है। अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देकर, दिमागीपन का अभ्यास करके, अपनी आवश्यकताओं और सीमाओं को संप्रेषित करके, और अपनी देखभाल करके, आप जीवन के एक पहलू को खोने के डर को दूर कर सकते हैं और काम और निजी जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन का आनंद ले सकते हैं। याद रखें, आप जो खो रहे हैं उसके बारे में चिंता करने में व्यतीत करने के लिए जीवन बहुत छोटा है। इसके बजाय, वर्तमान में जीने पर ध्यान केंद्रित करें और अपने रास्ते में आने वाले हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं।



सड़क का बंटवारा



असित कुमार सिंह
PGP 2022-24

“सुने हैं लाखन मर गया।”

“मर गया क्योंकि बेवकूफ था।”

“अरे बेवकूफ था तो क्या, आदमी न था?”

“बेवकूफ था और गरीब था।”

“मगर पेट से तो नहीं मरा, सड़क पर मरा है।

“तुमने सड़क देखी है? देखी होगी, मगर गौर से देखी है क्या? हमने देखी है। ये सड़कें भी हमें नापती हैं। खाली जेब हो तो किनारे चलो। पैदल राही हो न, तो किनारे चलो।

तुम्हारे लिए पत्थर जोड़े पगडंडियां बनाई तो हैं। रेखांकित रास्ते हैं, उनपर चलो। थोड़े पतले हैं तो क्या हुआ? तुम्हे कौन सा जमीन का लोभ है, ना ही आदत है, हाँ, थोड़े मैले हो चले हैं, अपना गमछा मुँह पर बांध लेना। जो भी है हमारी सहूलियत के लिए बना रखा है। यहीं लगाओ अपनी दुकान और ठेला, यहीं से सब्जी तरकारी ले लेना।

बस बीच सड़क मत निकल जाना, पता है न बीच सड़क कौन चलता है? वहां चलती हैं गाड़ियां, आलीशान गाड़ियां जिसमें से बाबूजी की बीवी बड़े कष्ट से कांच नीचे उतार कर मुँह बिगाड़ती हैं। अपना भुट्टा खिड़की से ही ले के पैसे थमा के निकल जाती है।

बीच सड़क चलते हैं उन लोगों के काफिले जिनके नाम की सड़क है। अब बताओ, हम मुट्ठी भर मजदूर जात को किनारे जगह मिल जाए तो कौन हर्जा है?

बीच सड़क फिर चलते हैं उनके बच्चे, बसों में भरकर अंग्रेजी स्कूल जाते हैं, पढ़ लिख कर वही काम संभालने, फिर उनके भी नाम की सड़क होगी। तुम्हारा लड़का क्या करता है? दुकान पर ही तो होगा न?

ये सड़कें सब जानती हैं, कौन कहाँ रहता है, कहाँ जाता है, क्या करता है, मालिक नौकर सबका भेद जानती है। इनको कौन पट्टी पढ़ाएगा?”

“मगर भईया, लाखन को दबा दिए, गलत किये।”

“कौन कहता है? नहीं जाना था बीच में, उनके बीच। बंटवारा है तो कुछ तो लाज रखो। कोई सेठ इस कोने चला है कभी? तुमको बीच में चलना है तो पहले गाड़ी वालों को इधर आना होगा, पैदल, गमछा बांधे। तब जाना कभी बीच सड़क। वर्ना अपने हिस्से में रहो और राम नाम लो।”

“ये सही कही भईया, राम नाम लो।”

छुटकू जरा इधर सुन, ये ले पैसा, बाजार से दो ठो पान लिए आ। एक टॉफी भी ले लेना... और सुनो, किनारे से जाना।”



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : चुनौतियाँ, उपयोग, और भविष्य



शैलेष टटवारे

कार्यकारी सहायक (ट्रेवल – हॉस्पिटैलिटी सेक्शन)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक तकनीक है जो मानव बुद्धि के समान कार्य करने में सक्षम होती है। इस तकनीक के संभव उपयोगों में स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय सेवाएं, संचार, उत्पादन, शिक्षा, सुरक्षा और अन्य शामिल हैं। इसके अलावा, स्वचालित गाड़ियों, स्वचालित मशीनों, स्वचालित प्रक्रिया और अन्य भी संभव हैं।

आपको जानकर आश्चर्य होगा की ऊपर लिखा गया पैरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (चैट जीपीटी टूल) तकनीक द्वारा लिखा गया है। पूरा आर्टिकल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के माध्यम से किसी भी विषय पर सटीक लिखवाया जा सकता है लेकिन यहाँ एआई के विश्लेषण पर मानवीय दखल आवश्यक है। एआई के बढ़ते उपयोग से कई महानुभव चिंतित है खासकर भारत जैसे विकासशील देशों में इस बात को लेकर ज्यादा भय है की कहीं ये आधुनिकी तकनीक रोजगार खत्म ना कर दे। लेकिन विकसित देश इससे आगे मानव अस्तित्व पर मंडराते खतरे को देख रहे है।

हाल ही में गूगल में काम कर रहे जेफ्री हिंटन जिन्हें आधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जनक भी कहा जाता है, एआई के बढ़ते उपयोग और उससे भविष्य में होने वाले भयानक नुकसान को देखते हुए कम्पनी से इस्तीफा दे दिया है। कैलिफोर्निया में स्थित मशीन इंटेलिजेंस रिसर्च इंस्टिट्यूट के एलीजर युडकोव्स्की (डिसिजन थ्योरिसिस्ट) का मानना है की अगर हम इंसान से अधिक बुद्धिमान एआई (सुपरह्यूमन स्मार्ट एआई) की रचना करते हैं तो यह मानव जाति के अंत की शुरुआत होगी। मार्च 2023 की टाइम पत्रिका के एक अंक में उन्होंने लिखा की अत्यंत शक्तिशाली एआई कृत्रिम जीवन की रचना कर प्राकृतिक जीवन के विरुद्ध जंग छेड़ सकती है।

स्तिथि की गंभीरता को देखते हुए फ्यूचर ऑफ लाइफ इंस्टिट्यूट ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चैट जीपीटी-4 से अधिक पावरफुल एआई के प्रशिक्षण पर छः माह के लिए प्रतिबंध लगाने के लिए एक लैटर जारी किया है जिसमे सहमति के तौर पर एलन मस्क (सीईओ, स्पेसएक्स-टेस्ला-ट्वीटर) और स्टीव वोजिनएक (को-फाउंडर एप्पल) जैसे लगभग बीस हजार से अधिक लोगों ने अब तक अपनी सहमती जाहिर करते हुए हस्ताक्षर किये है। बहुचर्चित एआई चैट जीपीटी बनाने वाली कंपनी 'ओपन एआई' के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने युएस सिनेट के समक्ष कहा कि गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनियाँ जिस तरह से एआई को एक्सपोजर दे रही है, इससे दुनिया खतरे में पड़ सकती है और सरकारों को इस पर नियंत्रण रखना ही होगा। साथ ही इसी 'ओपन एआई' कम्पनी की टेक्नोलॉजी अधिकारी मीरा मुराती भी इस बात से सहमत है की इस टेक्नोलॉजी का दुरुपयोग हो सकता है।

इस तकनीक से ऊपर लिखी गई भविष्य की चिंता और भय तो है, लेकिन ऐसा क्या है जो इसका इस्तेमाल बड़े पैमाने पर बढ़ रहा है और हम खुशी-खुशी अपना भी रहे है। इसका सबसे नजदीकी और सरल उदाहरण है स्मार्टफोन में उपयोग होने वाला गूगल असिस्टेंस जो केवल आपके बोल देने से सारे काम कर देता है ये ठीक वैसा ही है जैसे अलादीन का चिराग फिर इसे आदेश देने वाला कोई भी हो जैसे साक्षर या निरक्षर, बच्चा या प्रौढ़ और अपनी पसंद के कार्य करवा सकते है इनमे आपके पसंद का संगीत, देश दुनिया के समाचार, कहीं जाने के लिए आसान रास्ते की खोज हो या घर बैठे कोई व्यंजन बनाना सीखना हो। ये तो रोजमर्रा की जरूरतों के काम है लेकिन एआई का

उपयोग इससे बढ़कर चिकित्सा के क्षेत्र में जटिल सर्जरी, कैंसर जैसे असाध्य रोगों के उपचार में सहायता, ऑफिस वर्क में नोटिंग—ड्राफ्टिंग और किसी भी भाषा का ट्रांसलेशन, जीमेल के स्मार्ट जवाब, ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में मैनुफैक्चरिंग और सेल्फ—ड्राइविंग कार, मानवरहित यातायात व्यवस्था, और शिक्षा जगत में विधार्थियों को उनके अनुरूप शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाने जैसी सुविधाएँ ठीक उसी प्रकार उपलब्ध होती है जैसे की इंसानों की सोच के द्वारा उत्पन्न होती है। सदी के महान वैज्ञानिक रहे स्टीफन हॉकिंग का कहना था कि “आने वाले भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानवों को दौड़ में पीछे कर देगा।”

आइए कुछ एआई द्वारा की गई गलतियों पर भी नजर डालते हैं, दिसंबर 2019 में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ड्राइविंग सिस्टम के साथ टेस्ला कार चला रहे एक व्यक्ति ने एक दुर्घटना में दो लोगों की जान ले ली। टेस्ला ड्राइवर को कई साल की जेल का सामना करना पड़ा।

2020 में, यूके सरकार ने “कोरोनावायरस सूचना बॉट” या “सीआईबॉट” नामक एक एआई—पावर्ड वर्चुअल असिस्टेंट विकसित किया था जो COVID—19 के बारे में सवालों के जवाब देने के लिए था। बॉट का उद्देश्य वायरस के बारे में जनता को जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करना था और इसे सरकार की वेबसाइट और सोशल मीडिया चैनल के माध्यम से उपलब्ध कराया गया था। हालांकि, बाद में पाया गया कि बॉट COVID—19 से संबंधित कई विषयों पर गलत सूचना और गलत मार्गदर्शन प्रदान कर रहा था। बॉट से वायरस के लिए कुछ अप्रमाणित उपचारों की सलाह दी जा रही थी और वायरस के प्रसार और गंभीरता के बारे में गलत जानकारी भी प्रदान की जा रही थी।

अब सवाल यह उठता है कि क्या इंसान की बुद्धि और विवेक की नकल करने वाली तकनीक से उपजा डर सही है? क्या वास्तव में भविष्य मशीनों का है और खतरे का अंदाजा लगते हुए इंसान को मशीनी तरक्की रोक देनी चाहिए?

यह एक विस्तृत मुद्दा है जिसमें कई तत्व शामिल हैं। इसलिए, मशीनों के साथ इंसान की बुद्धि और विवेक के बीच संतुलन को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुद्धि मनुष्यों का प्रमुख गुण है। हमारी सभ्यता ने आज तक जो कुछ भी उपलब्धियां हासिल की हैं, वे मनुष्य की बुद्धि का ही नतीजा हैं। तकनीकी विकास के नाम पर एआई द्वारा कितना भी विकास कर लें लेकिन कई मुद्दों पर जहाँ ह्यूमन—टच, इमोशनल—कनेक्ट, सहानुभूति, जिम्मेदारी और अनुभव आधारित परामर्श जैसे गुणों की जरूरत है वहां तकनीक पर विश्वास करना अभी पूरी तरह सही नहीं है। क्योंकि वैज्ञानिक और शोधकर्ता अभी भी मानव विचार प्रक्रिया के पीछे के रहस्य को नहीं जानते हैं, इसलिए यह बहुत कम संभावना है कि हम जल्द ही ऐसी मशीनें बना पाएंगे जो मनुष्यों की तरह “सोच” सकें।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि हमें सुनिश्चित करना होगा कि मशीनों का उपयोग हमारे लिए सकारात्मक रहे और उन्हें संवेदनशीलता के साथ विकसित किया जाए। इसलिए, हमें समय—समय पर मशीनों के उपयोग की पुनरावृत्ति और सुरक्षा नीतियों की समीक्षा करते रहना चाहिए।

इसके अलावा, हमें मशीनों के संबंध में जागरूकता बढ़ाने की भी जरूरत है। यह उन लोगों के लिए भी आवश्यक होगा जो मशीनों के उपयोग से परिचित नहीं हैं। हमें समझना होगा कि मशीनों का उपयोग हमारे जीवन को कैसे सुधार सकता है और उनसे कैसे संबंध बनाए रखा जा सकता है।

संक्षेप में, मशीनों का उपयोग सकारात्मक हो सकता है यदि हम संवेदनशीलता के साथ उन्हें विकसित करें और संरक्षण नीतियों का पालन करें। हमें अधिक जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता होगी ताकि हम संभावित खतरों से सामना करने के लिए तैयार रहें और सुनिश्चित करें कि मशीनों का उपयोग हमारे लिए सकारात्मक हो।



वृष्टि की वाणी



रुद्रांश कंधारिया पुत्र : श्री जिगर कंधारिया अधिकारी
(पूर्व छात्र शैक्षणिक सत्यापन एवं कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यालय)

और तुम कौन हो? पूछा मैंने कोमल—बरसती बौछार से,
जो, है विचित्र बताने के लिए, कि मुझे उत्तर देती, जैसे कि यहाँ अनुवादित है:
मैं वसुंधरा का काव्य हूँ, कहा वृष्टि की वाणी ने,
धरा और अथाह समुद्र से अस्पृश्य शाश्वत मेरा उदय,
ऊर्ध्व अमरावती की ओर, जहां से, मैं किंचित निर्मित होती,
सर्वथा बदलती, और अभी भी वैसी,
मैं अनावृष्टि, सूक्ष्म अणुओं, गर्द की परतों को पखारने के लिए अवतरण करती,
और उन सभी में बिना मेरे अस्तित्व के,
थे केवल बीज, अव्यक्त, अजातय और सर्वदा, दिन और रात से,
मैं प्रदान करती हूँ पुनः जीवन अपने उद्भव को, और बनाती शुद्ध और सुशोभित इसे:
(क्योंकि गीत, जो निर्गत होता है अपने जन्म—स्थल से, अभिलाषित की पूर्ति के उपरांत, भटकता है, चाहे कोई
ध्यान दें या न दें, वह विधिवत प्रणय के साथ पुनरागमन करता है।)



संक्षिप्त लेख

संचार के युग में मीडिया की भूमिका

वर्तमान समय में एक आधुनिक, सामाजिक लोकतंत्र में मीडिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमारे जनमत और सामुदायिक मतैक्य को आकार देने की नींव को पुख्ता करता है। संचार के युग में पूरी दुनिया के तार जोड़ने वाली मीडिया की रोचक तथा जीवंत दुनिया उनकी सक्रिय एवं सचेत पहल के बिना पूर्णतया निष्प्राण होती है। जनसंचार और मीडिया एक ऐसा कार्यक्षेत्र है जो हमारी सरकार की एक अदृश्य चौथी शाखा होने के अतिरिक्त मूल तथा सत्यापित सामग्री का उत्पादन भी करता है। आचार संहिता तथा सत्य की खोज कर उसे प्रतिवेदन करना भी मीडिया के अविच्छेद्य तत्त्व है। यह लोगों को सर्वोत्तम संभव उपलब्ध जानकारी प्रदान करता है जिससे वे अपने जीवन के समस्त पहलुओं के विषय में सूचित निर्णय ले सकें। उपसंहार में, यह प्रस्तुत पंक्तियाँ मीडिया की भूमिका का सटीक वर्णन करती है :-

शक्ति का तू स्रोत है, वाणी में तेरी ओज है
लोक के इस तंत्र का तू एक महान स्तंभ है।

भूल निज स्वार्थ को, फिर देश का विकास कर,
मनुज के मानस में तू पुनः विश्वास भर।



“तुम हो अनंत”



जाह्वी त्रिपाठी
अधिकारी प्रवेश विभाग

लहराओ जैसे वायु हो तुम,
बहो जैसे गंगा की धार हो तुम,
क्या हुआ की कोई कारवाँ ना हो संग,
स्वयं अनंत ऊर्जा के आकार हो तुम।

क्या सूर्य कभी रुका है,
क्या रुकी है धरती कभी,
या रुकी है कभी नदियाँ,
फिर, आज तुम थमे हो क्यूँ।

वर्षों के नींद से अब जाग भी जाओ,
अमिट पंच तत्व की संरचना हो तुम,
हर काल के दो धार तलवार हो तुम,
माँ के रक्त को साकार करो तुम।

तुम रक्षक हो, तुम हो वीर,
तुम्हारे हाथ मे है पृथ्वी की तस्वीर,
चलो उठो तुम्हे बढ़ना होगा,
चलो आज कुछ सुकर्म करना होगा।।

“तुम हो अनमोल”

माँ वो बहुमूल्य धन है, जो अमृत सुधा बरसाती है।
बन बेटी वो घर की शोभा, एवं मान बढ़ाती है।

बन बहन वो भाई—गौरव को गाती इठलाती है।
जब बने वो जीवन संगिनी, तब आधा अंग बन जाती है।

कभी फूलरानी, कभी क्षत्राणी बन वो घर को चलाती है।
कभी लक्ष्मी रूप, सरस्वती स्वरूपा, बन दुर्गा धरती को बचाती है।

आओ पुकारें इस ऊर्जा को, जो जग की है प्राण पुंज।।
आशा करती हूँ आपको यह छोटी प्रस्तुति अथवा लेख पसंद आए।



माता—पिता का सम्मान



सत्येंद्र गोंडः
प्रवेश कार्यालय

माता—पिता का सम्मान करना दुनिया भर की कई संस्कृतियों में एक मूलभूत मूल्य है। यह एक कालातीत गुण है जो व्यक्तियों को आकार देने और सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक संबंधों को बढ़ावा देने में अत्यधिक महत्व रखता है। जिस तरह से हम अपने माता—पिता के साथ व्यवहार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, वह हमारे चरित्र, मूल्यों और हमारे जीवन में उनके द्वारा किए गए बलिदानों के लिए प्रशंसा को दर्शाता है।

1) प्यार और पोषण का बंधनः

माता—पिता हमारे जीवन में आने वाले पहले व्यक्ति हैं। हमारे जन्म के क्षण से ही वे प्यार, देखभाल और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। माता—पिता का सम्मान करना प्राथमिक देखभाल करने वालों के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करता है, हमारे पोषण और हमारी भलाई सुनिश्चित करने के उनके प्रयासों को स्वीकार करता है। यह प्यार और विश्वास पर निर्मित एक मजबूत बंधन बनाता है, एक सकारात्मक पारिवारिक गतिशीलता को बढ़ावा देता है।

2) बलिदानों के लिए आभारः

माता—पिता अपने बच्चों के लिए अनगिनत त्याग करते हैं। वे एक आरामदायक और सुरक्षित परिवार सुनिश्चित करने के लिए अपना समय, ऊर्जा और संसाधन समर्पित करते हैं। माता—पिता का सम्मान करने में इन बलिदानों को पहचानना और उनकी सराहना करना शामिल है, उनके द्वारा प्रदान किए गए अवसरों को स्वीकार करना और हमारे लिए उन्होंने जिन चुनौतियों का सामना किया है, उन्हें स्वीकार करना। इस तरह की कृतज्ञता माता—पिता—बच्चे के रिश्ते को मजबूत करती है और उनकी निस्वार्थता की हमारी समझ को गहरा करती है।

3) आदर्श

माता—पिता का सम्मान करना आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल कायम करता है। जब बच्चे अपने माता—पिता को सम्मान के साथ व्यवहार करते हुए देखते हैं, तो वे पारिवारिक संबंधों को महत्व देने और उनका सम्मान करने के महत्व को सीखते हैं। यह मूल्य पीढ़ियों के माध्यम से पारित किया जा सकता है, पूरे परिवार और समाज के भीतर सम्मान की संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है।

4) बुद्धि और मार्गदर्शन

माता—पिता के पास जीवन के अनुभव, ज्ञान और ज्ञान का खजाना होता है। माता—पिता का सम्मान करने में महत्वपूर्ण निर्णयों या चुनौतियों का सामना करने पर उन्हें स्वीकार करना और उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना शामिल है। उनकी सलाह और परिप्रेक्ष्य मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं और हमें उनकी गलतियों को दोहराने से रोक सकते हैं। सम्मानजनक संचार सार्थक आदान—प्रदान की अनुमति देता है जो पीढ़ी के अंतर को पाटता है और समझ को बढ़ावा देता है।

5) भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक भलाई

माता-पिता का सम्मान करने से हमारे भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कल्याण में योगदान होता है। यह सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देता है, यह जानकर कि हमारे पास एक समर्थन प्रणाली है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं। सम्मान पर निर्मित माता-पिता-बच्चे के मजबूत संबंध तनाव के निचले स्तर, मानसिक स्वास्थ्य में सुधार और समग्र जीवन संतुष्टि में वृद्धि से जुड़े हैं।

निष्कर्ष

माता-पिता का सम्मान करना केवल एक सांस्कृतिक मानदंड नहीं है। यह एक नैतिक दायित्व है जो हमारे भीतर प्रेम, कृतज्ञता और सहानुभूति पैदा करता है। यह उनके द्वारा किए गए बलिदानों और बिना शर्त प्यार को स्वीकार करता है जो उन्होंने हमें जीवन भर दिखाया है। अपने माता-पिता के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करके, हम उस नींव का सम्मान करते हैं जो उन्होंने हमारे लिए रखी है और स्वस्थ, समृद्ध पारिवारिक संबंधों के विकास में योगदान करते हैं।



मेवाड़ के महाराणा



सार्थक खोडे
उम्र 16 वर्ष

सन् 1540 में एक ऐसा योद्धा जन्मा,
जिसके नाम से डरते बड़े बड़े सुरमा,
बचपन से था जिसने बस एक सपना संजोया,
मेवाड़ के जन-जन में आजादी का बीज बोया।
उसे मुगलों को हराना था,
सदा मेवाड़ पर विजयी पताका फहराना था।
शुरू हुआ युद्ध हल्दीघाटी का
खड़े योद्धा मैदान में बचाव करने अपनी माटी का।
बहलोल खान ने आतंक मचाया,
महाराणा ने उसे घोड़े सहित दो टुकड़ों में मार गिराया।
चेतक ने भी सदा साथ निभाया,
महाराणा को 22 फीट लम्बा नाला पार कराया।
कई योद्धाओं ने दिया अपने प्राणों का बलिदान,
बचाने के लिए मेवाड़ की आन बान और शान।



धैर्य में है समझदारी



अभिनव बर्वे

असिस्टेंट इंजीनियर (सिविल), संपदा विभाग

इस आधुनिक जमाने में जहाँ इंटरनेट 3G/4G/5G की स्पीड में चल रहा है, वहाँ मनुष्य भी कोई फैसले लेने में देरी नहीं करता। मनुष्य ये नहीं सोचता कि अपने इस अतिशीघ्र लिए फैसले का प्रभाव अपने या उस फैसले से जुड़े सभी लोगों के जीवन में क्या असर छोड़ेगा।

ऐसा नहीं है कि धनी लोग या बड़े पदों वाले लोगों के फैसले से ही बदलाव आता है, बल्कि साधारण मनुष्य की हर अवस्था में लिए छोटे बड़े फैसले से भी प्रभावित लोगों में आजीवन इसका असर देखने को मिलता है। जैसे :-किशोरावस्था में एक छोटा सा लिया फैसला कि आज नहीं कल पढ़ाई कर लेंगे ये उस मनुष्य के साथ-साथ उनके माता-पिता और आने वाले परिवार के जीवन में समस्याएं पैदा कर देता है।

युवावस्था में एक छोटा सा लिया फैसला कि 18-20 वर्ष तक जिन माता पिता ने ध्यान रखा, पढ़ाया लिखाया इस मुकाम तक पहुंचाया, उनकी बातें अब गलत लगती हैं और कुछ माह या कुछ वर्ष पूर्व जीवन में आए नए व्यक्ति की बातें सही लगती हैं। ऐसा नहीं कि इस अवस्था में सारे फैसले गलत ही होते हैं, मगर बिना सोचे समझे लिए गए फैसले जीवन में कभी न कभी दुविधा तो उत्पन्न करते ही हैं।

प्रौढ़ावस्था में अपने कार्यस्थल पर आवेश में आकर बिना विचारे कोई अनुचित निर्णय लेने से अपने जीवन से जुड़े सारे लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वृद्धावस्था में अपने बदलते स्वास्थ्य को अनदेखा कर यह फैसला लेना कि यह सब तो इस उम्र में चलता रहता है, ये छोटा सा फैसला आपके जीवन की अवधि को कम कर सकता है। या फिर हर बड़े से बड़े या साधारण मनुष्य की वृद्धावस्था का वो महत्वपूर्ण फैसला कि अपने जीवन की कमाई को अपनी संतानों में कैसे बांटे ताकि आगे चल कर कोई विवाद उत्पन्न न हो।

जल्दबाजी में लिया एक गलत फैसला जीवन के सारे सुख छीन लेता है और अंधकार छोड़ जाता है जिससे मन में बस एक ही शब्द रह जाता है :- काश । इस पर चंद पंक्तियां लिखी हैं :-

काश कि कभी नदी किनारे बैठा न होता,
काश कि नदी में चांद की परछाई को देखा न होता,
काश कि चांद को पाने की चाह में पानी में कूदा न होता,
काश कि डूबते समय तिनकों से सहारा लिया न होता,
काश कि उन तिनकों के झूठे दिलासो ने बीच मझदार में छोड़ा न होता।
काश कि कभी नदी किनारे बैठा न होता।



मैं उनके गीत सुनाती हूँ



श्रीमती जया परिहार
पत्नी श्री मानस परिहार, अधिकारी

मैं गाती हूँ गीत सदा ही हुए देश पर बलिदानों का,
मेरा रंग दे बसंती चोला गाने वाले मस्तानों का।
दुश्मन की लाश बिछाने वालों की मैं अमर कहानी गाऊं,
मैं गौरव गान सुनाती हूँ, सरहद के वीर जवानों का।
आंसू पीकर जिनके बच्चे प्यास बुझाते हैं,
बंगलो का बासी जूठन जो धोकर खाते हैं।
क्या बारिश क्या ठंडी गर्मी हर ऋतु जिसे समस्या है,
पेट पाल कर जिंदा रहना जिसके लिए तपस्या है।
मैं उनकी उस पीड़ा की कथा सुनाती हूँ।
दबे उपेक्षित लोगों की मैं व्यथा सुनाती हूँ।
आसमान है जिसकी चादर धरती जिसे बिछौना है,
महलों की चारदीवारी में फंस जो बन गया खिलौना है।
जिसके हिस्से का हिस्सा—बंट कर इधर—उधर बंट जाता है।
जिसकी किस्मत का भाग्य लेख कुछ हाथों से मिट जाता है।
मैं उनकी करुण पुकार भरा वो क्रंदन गान सुनाती हूँ।
क्या होती है यार फकीरी तान सुनाती हूँ।



कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा
सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है।

— थास्मिस डेविस

कोई लौटा दे वो बीते दिन'



श्रीमती गिरिजा कुमार

पत्नी: श्री प्रेमजी कुमार, अधिकारी

खेला करते घर आंगन में
कभी धूप कभी छांव में
न आज की फिक्र न कल की चिंता
न कंकड़ न कांटा चुभता था पांव में।
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

स्कूल भी था अपना बड़ा ही प्यारा
जानता था हमको गांव सारा
सब थे अपने कोई न था पराया
सर पर था आशीर्वाद का साया
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

हंसते थे खुलकर हम सब
गाते थे सुर ताल छोड़कर
काम—काज की बातें भूलकर
खाना खाते साथ मिलकर
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

पानी पीते नदी का सोते धरा पर
फल—फूलों से लदा बगीचा
नाचे मोर मुंडेरों पर
पकड़ते तितलियां सारा दिन
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

गर्मी के मौसम में छत पर
सोते थे पुरवाई में
सर्दी के मौसम में सब मिल
दुबक जाते थे रजाई में
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

कच्चे आम की चटनी, बाजरे की रोटी
कंचो व कांच से भरी हुई पेट्टी
कागज की कश्ती बारिश में तैर
छुट्टियों में मामाजी के घर की सैर
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

सुबह सुहानी शाम निराली
चिड़िया चहके डाली डाली
कहानियां सुनाती थी दादी और नानी
जी लेते थे जीवन जीभर
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....

अनमोल बचपन के वो कीमती क्षण
जीवन का स्वर्णिम काल था बचपन
सभी का समेटकर अपनापन
कोई लौटा दे वो बीते दिन.....



सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।

— जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

अनुभवी



अक्षिता श्रीवास्तव
पुत्री श्री राजेश श्रीवास्तव

बड़े पेचीदा से नजर आते हैं,
वो लोग जो हर दफा मुस्कराते हैं !
जिन्दगी के जैसे हर पहलू को समझ जाते हैं,
कौन हैं वो लोग जो इतने अनुभवी कहलाते हैं!
सीखना उनसे कई बार चाहा है मैंने,
जिन्दगी को भी खुली बाहों से सराहा है मैंने !
कई बार चाह कर भी हमको रुतबा नहीं मिलता,
पर ठीक है न
कई दफा फकीर को भी खुदा नहीं मिलता !



मैं अकेला फिर भी न अकेला



युगमनाथ पाठक
अकादमिक सहायक

मैं अकेला, फिर भी न अकेला
सर जग है संग में,
न दुराव है तन-मन में,
नहीं लगता, कि कुछ है झेला
मैं अकेला ...
है, झंकार पूरे रंग में
तबले की थाप भी है सम में,
हाथ नहीं है किसी कुसंग में,
एक होकर भी मैं दुकेला
मैं अकेला ...



कामयाबियां



पंकज जैन
सनदी लेखाकार

तलाश रहा हूं जिस मंजिल को, उसके राही और भी हैं,
खींच रहा हूं जिस कश्ती को, उसके माझी और भी हैं,
देख रहा हूं जिन सपनो को, वो किसी और की आँखों में भी हैं।
खेल रहा हूं जिस दांव को, उसके खिलाडी और भी हैं,
तड़प रहा हूं जिस दर्द से, उसके भागी और भी हैं,
सोच रहा हूं जिस भविष्य की, उसके अभिलाषी और भी हैं,
फिर भी खुद पर है यकीन, इस दौड़ में जीतूंगा मैं ही,
मेहनत करूं गर निरंतर निशदिन, तो कामयाबियां आगे और भी हैं।



संजीवनी – संगीत विद्या



श्रीमती रंजना चौरे

यूँ तो संगीत के द्वारा किये गये अनेक चमत्कार हैं, स्वर कोकिला स्व. लता मंगेशकर जी ने जब स्व. जवाहर लाल नेहरू के समक्ष “ऐ मेरे वतन के लोगों” जब सुनाया तो पंडित जी फूट फूट कर रोये थे, अर्थात संगीत में वो क्षमता है जिससे व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है। 21 जून को विश्व संगीत दिवस फ्रांस ने 1982 में घोषित किया था आज 140 से अधिक देश इस दिन को मनाते हैं संगीत का प्राणी मात्र में बहुत महत्व है, पक्षियों के कलरव, नदियों की कल-कल, पक्षियों की चह-चहाहट मन को तरोताजा कर देते हैं। संगीत के बिना मानव जीवन की कल्पना निर्मूल है। एक शोध के अनुसार संगीत से रक्तचाप का दबाव सामान्य रहता है, संगीत अवसाद को दूर करता है, गाय या भैंस सामान्य से अधिक दूध देती है, यदि उनको मधुर संगीत सुनाया जाय, संगीत सम्राट तानसेन अपनी तान से वर्षा तक करवा देते थे, दिये जला देते थे।

संगीत एक मधुर और वैश्विक भाषा है, संगीत में भाषा की कोई बाधा नहीं होती।

मानव जीवन में कई तरह की प्रतिक्रियाएं होती हैं जैसे मुग्ध हो जाना, जोश से भर जाना, संगीत हममें जोश भी भर देता है, युद्ध के समय इसका बहुत महत्व होता है, प्राचीन काल से वर्तमान युग तक संगीत युद्ध का अहम हिस्सा रहा है, सुरुचि पूर्ण संगीत हमें मुग्ध करता है। मुग्ध होना एक आत्मानंद की अवस्था है जहां हम ईश्वर के निकट पहुंचते हैं। संगीत एक तरह से हमारी रूह की सर्वासिंग करता है, मानव जीवन में संगीत की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि संगीत सुनना सभी को अच्छा लगता है कोई व्यक्ति यदि संगीत में रूचि रखता है, तो वह अपने जीवन में सर्वदा खुश रहता है। हर तरह के तनाव से मुक्त शांत रहता है। संगीत से मन-मस्तिष्क शांत रहता है। किसी मंगल कार्यक्रम की रौनक बढ़ जाती है जब धीमा और सुमधुर संगीत बजता है। संगीत हमें खुश रखता है हमारे शरीर में हार्मोन के संतुलन को भी बनाए रखता है। वर्तमान समय में संगीत एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो व्यक्ति को शारीरिक-मानसिक रोगों व व्याधियों से मुक्ति प्रदान करता है। संगीत की तीनों धाराएँ (गायन, वादन व नृत्य) न केवल स्वर, ताल और लय की साधना है, बल्कि एक यौगिक क्रिया है इससे शरीर, मन और प्राण तीनों में शुद्धता और चैतन्यता आती है। संगीत आपके विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करने में मदद करता है प्रेम, शान्ति, क्रोध, उत्तेजना और भी अनेक भावनाओं को व्यक्त करने में संगीत मदद करता है। एक अच्छा संगीत जहाँ आपके मूड को तरो ताजा कर देता है, वहीं बुरा संगीत आपके दिमाग को खराब भी कर सकता है। यदि आप नैराश्य पूर्ण गीत सुनते हैं तो आप डिप्रेशन में भी जा सकते हैं।

संगीत उदासी का साथी है, स्वर लहरी है,
संगीत के बिना जिंदगी अधूरी है।



नौ रसों में सराबोर समकालीन प्रबंधन



डॉ. अनन्या मिश्र

गतिशील प्रबंधकीय दुनिया में आज सभी संगठन एक जटिल और लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य को समझने के प्रयास में डूबे हुए हैं। किन्तु ऐसे में मानवीय भावनाओं की शक्ति को समझने के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। दक्षता, उत्पादकता और सर्वश्रेष्ठ अंतिम परिणाम की ऊहापोह के बीच, हमें मानव भावनाओं की समग्र प्रकृति को अपनाने की आवश्यकता है। यही वह समय और स्थिति है जहाँ प्राचीन भारतीय शास्त्र और भावनाओं से प्राप्त नौ रसों की अवधारणा प्रासंगिक है। ये नौ रस – शृंगार, हास्य, वीर, करुण, रौद्र, भयानक, विभत्स, अद्भुत और शांति – भावनात्मक आयामों की गहन समझ प्रदान करते हैं जो संगठनों के भीतर व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। आइए, मेरे इस लेख के माध्यम से एक ऐसी दुनिया में कदम रखें, जहां प्राचीन ज्ञान और आधुनिक नेतृत्व का समागम होता है, और जिसे कालातीत भारतीय धर्मग्रंथों के धागे और समकालीन प्रबंधन के ताने-बाने के साथ बुना गया है।

1. शृंगार रस: राधा और श्रीकृष्ण की मनमोहक दुनिया से हम सभी परिचित हैं। वह दुनिया जहाँ वृन्दावन की सुंदरता के बीच दिव्य प्रेम पनपता है। भागवत पुराण में भी उनकी कहानी प्रेम के रस का सार दर्शाती है। एक ओर शुद्ध भक्ति और समर्पण का प्रतीक हैं राधा, और दूसरी ओर श्रीकृष्ण, दिव्य प्रेम का अवतार। दोनों का चंचल सा सम्बन्ध, मधुर संगीत और मनोरम नृत्य सम्पूर्ण वृन्दावन को मोहित और शृंगारित करता है। उनका प्रेम भौतिक दायरे से परे है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी भक्तों के हृदयों में गुंजायमान है। आज भी हम जब उनका नाम लेते हैं, तो साथ में – 'राधा-कृष्ण' ही पुकारते हैं।

समकालीन प्रबंधन के क्षेत्र में, प्रेम से यहाँ तात्पर्य मजबूत रिश्ते बनाने, कर्मचारी जुड़ाव को प्रोत्साहन देने और विश्वास और अपनेपन की संस्कृति का शृंगार करने से है। यह करुणा, सहानुभूति और सभी सदस्यों की भलाई के बारे में है। इस भाव से एक प्रबंधक अपने अधीनस्थों के बीच वफादारी, प्रेरणा और उद्देश्य की भावना को प्रेरित कर सकते हैं। जिस प्रकार राधा की अटूट भक्ति श्रीकृष्ण के साथ एक अनन्य बंधन बनाती है, उसी प्रकार जो प्रबंधक वास्तव में अपने अधीनस्थों की देखभाल करते हैं, वे एक प्रतिबद्ध कार्यबल विकसित कर सकते हैं। वे अपने कर्मचारियों की जरूरतों और आकांक्षाओं को समझने, समर्थन देने, मार्गदर्शन और मान्यता प्रदान करने को प्राथमिकता देते हैं। यह दृष्टिकोण एक सकारात्मक कार्य वातावरण को शृंगारित करता है जहां व्यक्ति मूल्यवान, सम्मानित और सराहना महसूस करते हैं।

2. हास्य रस: भारतीय लोककथाओं का एक प्रिय पात्र जो अपनी बुद्धि और हास्य के लिए प्रसिद्ध है वह है तेनाली राम। हम सभी उनके हास्यपूर्ण उपाख्यानो और चंचल चुटकुलों से आनंदित हुए हैं। उनकी ज्ञान से पूर्ण हास्य कहानियाँ सभी के चेहरों पर मुस्कान लाती हैं। कितनी भी कठिन परिस्थिति हो, तेनाली राम न सिर्फ स्वयं को उस परेशानी से निकाल लेते अपितु अपने साथ सभी लोगों को भी सुरक्षित रखते।

कार्यस्थल पर आनंद का यह रस सकारात्मक कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने, कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने

और रचनात्मकता और उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हास्य कार्यस्थल पर तनाव कम करने, सभी की कार्यशैली में सुधार करने और एक ऐसा माहौल बनाने की शक्ति है जहां नवाचार उत्पन्न होता है। इससे कर्मचारियों की भलाई, जुड़ाव और संतुष्टि बढ़ सकती है। एक हल्का-फुल्का माहौल खुले संचार को प्रोत्साहित करता है, आपसी सौहार्द में सुधार करता है, और एक सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देता है जहां, हर कर्मचारी अपने विचारों और राय को व्यक्त करने में सहज महसूस करते हैं। जिन प्रमुखों में हास्य गुण होता है वे तनावपूर्ण स्थितियों को दूर कर सकते हैं और सभी अधीनस्थों को भी हल्का महसूस करा सकते हैं। इसके अलावा, चुनौतीपूर्ण समय के दौरान हास्य लचीलापन बनाए रखने में मदद करता है, ईर्ष्या को कम करता है और समग्र कार्यस्थल के वातावरण में सुधार करता है।

3. **वीर रस:** महाभारत में धनुर्धारी अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की कहानी वीर रस का अद्भुत उदाहरण है। अनुभवहीन होने के बावजूद, वह निडर होकर अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए एक जटिल और अभेद्य युद्ध संरचना चक्रव्यूह में प्रवेश कर गया। किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए, पहले हमें उस चुनौती को स्वीकार करना और पहला कदम उठाना आवश्यक है। लेकिन, यह कहानी हमें यह भी सीख देती है कि वीरतापूर्ण कदम उठाने से पूर्व हमें संभावित चुनौतियों से निपटने में भी सक्षम होना चाहिए।

वीरता सभी प्रबंधकों के लिए जरूरी है क्योंकि यह परिकल्पित जोखिम लेने, चुनौतियों को स्वीकार करने और विपरीत परिस्थितियों में लचीलापन प्रदर्शित करने पर जोर देती है। साहसी प्रमुख अधीनस्थों को अपनी सीमाओं से परे, अज्ञात क्षेत्रों का पता लगाने और उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे स्वयं भी अप्रत्याशित का सामना करने से नहीं डरते। वे जानते हैं कि नवाचार और विकास अक्सर परिचित सीमाओं से परे होते हैं। वे एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जो रचनात्मकता और निरंतर सुधार को बढ़ावा देता है। प्रबंधन प्रथाओं में वीर रस को शामिल करना हमें उस परिवर्तनकारी शक्ति की याद दिलाता है जो हमारे आराम क्षेत्र से बाहर निकलने और चुनौतियों को स्वीकार करने से आती है।

4. **करुण रस:** प्राचीन भारतीय ग्रंथों में करुणा के प्रतीक राजा हरिश्चंद्र की कहानी उल्लेखित है। भीषण कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, राजा हरिश्चंद्र सत्य, धर्म और करुणा कायम रखने में दृढ़ रहे। व्यक्तिगत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, अपनी प्रजा के प्रति उनकी दयालुता के कार्य प्रशंसा को प्रेरित करते हैं और परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करते हैं।

वर्तमान समय में, संवेदनशील और करुण भाव रखने वाले प्रबंधक अपने साथ काम करने वाले सभी सदस्यों की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, सहानुभूति प्रदर्शित करते हैं और एक समावेशी कार्य वातावरण बनाते हैं। वे करुणा से मजबूत रिश्ते बना सकते हैं, कर्मचारियों की सहभागिता बढ़ा सकते हैं और समर्थन और समझ की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं। ऐसे करुण प्रबंधक अपने अधीनस्थों की भावनात्मक और व्यक्तिगत जरूरतों को पहचानते हैं और उनका समाधान करते हैं। इससे कार्यस्थल पर हर व्यक्ति मूल्यवान, सम्मानित और समर्थित महसूस करता है, जिससे वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम होता है। कॉर्पोरेट जगत में, करुणा टीम के भीतर बातचीत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हितधारकों को भी सम्मिलित करती है। यह नैतिक निर्णय लेने के बारे में है, और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देकर समग्र प्रगति पर केन्द्रित है।

5. **रौद्र रस:** भगवान शिव के तांडव नृत्य के प्रतीकवाद को समझेंगे तो हम जानेंगे कि रौद्र रस क्या है। ब्रह्मांडीय नर्तक के रूप में, भगवान शिव अज्ञानता और बुराई को नष्ट करने वाले नियंत्रित क्रोध का प्रतीक हैं। उनका क्रोध विनाशकारी होते हुए भी संतुलन और परिवर्तन लाने का उद्देश्य पूरा करता है।

एक प्रबंधक के लिए क्रोध, यानि इसी रौद्र रस को समझना और रचनात्मक रूप से प्रसारित करना महत्वपूर्ण

है। जो प्रबंधक क्रोध के रस का उचित उपयोग करना जानते हैं, वे मुखरता प्रदर्शित करते हैं, अन्याय के खिलाफ खड़े होते हैं और आवश्यक परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं। वे न सिर्फ जटिल मुद्दों का समाधान कर सकते हैं, बल्कि विकास को प्रोत्साहित कर ऐसे वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं जो निष्पक्षता और जवाबदेही को प्रोत्साहित करता है। जब रचनात्मक ढंग से निर्देशित रौद्र रूप सकारात्मक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक हो सकता है। यह यथास्थिति को चुनौती देने और निष्पक्षता और न्याय की वकालत करने में सक्षम बनाता है। रौद्र रस को ज्ञान और संयम से नियंत्रित किया जाना चाहिए। एक संतुलित दृष्टिकोण से ही परिवर्तन और संगठनात्मक प्रगति संभव हो सकती है।

6. **भयानक रस:** विष्णु पुराण में भक्त प्रह्लाद की कहानी से हम सभी परिचित हैं। प्रह्लाद अपने पिता हिरण्यकश्यप के अत्याचार का सामना करता है और अत्यधिक भय और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी अपनी भक्ति पर अडिग रहता है। उसकी अनन्य भक्ति से प्रसन्न होकर भगवन नरसिंह अवतार लेकर अपने भक्त की सुरक्षा करते हैं। पुराणों में नरसिंह अवतार सबसे भयानक माना गया है। किन्तु इतने भयावह होने के बावजूद उन्होंने अपने भक्त के प्रति प्रेम भाव रखा।

सहायक कार्य वातावरण बनाने के लिए डर या जोखिम को समझना और उसका समाधान करना आवश्यक है। स्थिति चाहे जितनी भी भयानक हो, जो प्रबंधक अपने डर को स्वीकार करते हैं, वे उसे कम करना भी सीख लेते हैं और अपने साथ काम करने वाले सभी व्यक्तियों को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा भी देने में सक्षम होते हैं। वे जोखिम लेने और कुछ नया करने के लिए सभी को सशक्त बनाते हैं। डर व्यक्तियों के विकास, रचनात्मकता और उत्पादकता में बाधा बन सकता है। लेकिन ऐसे प्रमुख जो डर को नियंत्रित कर लेते हैं और उसका उचित उपयोग समझ जाते हैं, वे चुनौतीपूर्ण समय के दौरान आश्वासन, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं। समस्या कितनी भी भयावह हो, साहस, लचीलापन और भेद्यता प्रदर्शित करके, अच्छे प्रबंधक अपने अधीनस्थों को डर पर काबू पाने और बदलाव को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वे एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहां विफलताओं को विकास और सीखने के अवसर के रूप में देखा जाता है।

7. **वीभत्स रस:** इसे दो प्रकार से समझा जा सकता है – एक है नृशंसता, और दूसरा है घृणा। महाकाव्य रामायण में जटायु की कहानी विभत्स रस को दर्शाती है। बेहद वफादार और महान गिद्ध जटायु ने राक्षस रावण को श्रीराम की पत्नी सीता का अपहरण करते हुए देखा। भक्तिभाव से प्रेरित होकर, उसने सीता को बचाने के लिए रावण का डटकर सामना किया। अत्यधिक शक्तिशाली होने के बावजूद, जटायु उसकी रक्षा के लिए बहादुरी से लड़ता है। अंततः, रावण ने जटायु के पंख काट दिये, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और अशक्त हो गया। धर्म की खातिर अपना जीवन दांव पर लगाने वाले जटायु के निस्वार्थ बलिदान को देखकर रावण के कृत्यों में नृशंसता से खिलाफ लड़ने की शक्ति झलकती है। साथ ही, जटायु ने तब तक प्राण नहीं त्यागे जब तक उसने श्रीराम को घटना का पूरा विवरण नहीं दिया।

प्रबंधन के क्षेत्र में जब भी कोई ऐसा कार्य हो जो बेहद अनैतिक, घृणित और हानिकारक हो, तो भी उसका डट कर सामना करना, नैतिक मूल्यों को बनाए रखना, अन्याय के खिलाफ बोलना और जो सही है उसी पर अडिग रहना आवश्यक है। इससे संगठनों के भीतर सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और निष्पक्षता को प्राथमिकता मिलती है। इससे सभी अनैतिक प्रथाओं को अस्वीकार करते हैं, और जवाबदेही और न्याय की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। साथ ही, इस रस को अपनाकर, प्रबंधक नैतिक जिम्मेदारी की भावना से अपने अधीनस्थों को उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी प्रकार, जब एक प्रबंधक अपने उत्तराधिकारी को जिम्मेदारी सौंपता है, तो आवश्यक है कि वह परिस्थिति से पूरी तरह से अवगत करने में सहायक हो, ताकि आने वाली समस्याओं का सामना किया जा सके और संगठन के समग्र लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा ना आए।

8. **अद्भुत रस:** 15वीं सदी के रहस्यवादी संत और श्रीकृष्ण के अवतार चैतन्य महाप्रभु का जीवन आश्चर्य के रस, अद्भुत रस का उदाहरण है। चैतन्य की भक्ति और आध्यात्मिक प्रथाएँ इतनी तीव्र और असाधारण थीं कि उन्हें अक्सर गहन परमानंद की स्थिति का अनुभव होता था। कृष्ण के प्रति उनका दिव्य प्रेम आनंदमय नृत्य, मधुर मंत्रोच्चार और दिव्य अनुभवों में प्रकट होता था जो सभी को आश्चर्यचकित कर देता था। चैतन्य की भक्ति की तीव्रता ईश्वर के साथ उनके गहरे संबंध और ऐसे अटूट विश्वास की परिवर्तनकारी शक्ति पर आश्चर्य की भावना उत्पन्न करती है।

अद्भुत रस कार्यस्थल के भीतर विस्मय, जिज्ञासा और अन्वेषण की भावना को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देता है। इस भाव को अपनाने वाले प्रमुख अपनी टीमों को सामान्य से परे सोचने, पारंपरिक सोच को चुनौती देने और नवीन विचारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिज्ञासा की संस्कृति और विकास की मानसिकता को बढ़ावा देकर, प्रबंधक अपने कर्मचारियों को नई संभावनाओं की तलाश करने, निरंतर सीखने में संलग्न रहने और उनकी रचनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रबंधन में अद्भुत रस को अपनाने से एक ऐसा वातावरण तैयार होता है जहां कल्पना और नवीनता का जन्म होता है और असाधारण उपलब्धियां हासिल होती हैं।

9. **शांत रस:** भगवान बुद्ध की ज्ञानोदय की ओर परिवर्तनकारी यात्रा शांति के रस का प्रतिनिधित्व करती है। गहन आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से, भगवान बुद्ध आंतरिक शांति प्राप्त करते हैं, हर प्रकार की पीड़ा से निवारण प्राप्त करते हैं और सद्भाव और करुणा के अपने संदेश को जनमानस तक फैलाते हैं।

कार्यस्थल पर संतुलित कार्य वातावरण बनाने, कर्मचारी कल्याण का पोषण करने और लचीलेपन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए शांति के रस को अपनाना महत्वपूर्ण है। 'शान्ताकारंभुजगशयनम्' की तरह जो प्रमुख इस रस को अपनाते हैं वे प्रभावी नेतृत्व की नींव के रूप में आंतरिक शांति के महत्व को पहचानते हैं। वे स्वयं कितनी भी कठिन परिस्थिति में हों, वे अपने भीतर शांति की भावना से संयमित स्थिति बनाते हैं और उनके अधीनस्थों के बीच विश्वास और स्पष्टता कायम रखते हैं। वे कर्मचारियों की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देते हैं, और सचेतनता और आत्म-देखभाल जैसी प्रथाओं को प्रोत्साहित करते हैं। ऐसे में सभी व्यक्ति अपने विचारों और चिंताओं को व्यक्त करने में सुरक्षित महसूस करते हैं और इससे कार्य और संगठनात्मक प्रदर्शन में सुधार होता है।

प्रत्येक रस मूल्यवान पाठ और सिद्धांत सामने लाता है जो नेतृत्व प्रभावशीलता को बढ़ा सकते हैं, सकारात्मक कार्य संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं और संगठनात्मक सफलता को आगे बढ़ा सकते हैं। साहित्य ने हमेशा से मनुष्यों को प्रेरणा दी है। भारतीय साहित्य में प्रबंधकों के लिए भी अद्भुत खजाना है। यहाँ मुझे सुभाषितानि के श्लोक का स्मरण होता है:

कविः करोति काव्यानि रसं जानाति पण्डितः।

अर्थात् एक कवि अत्यंत खूबसूरत कविता लिख सकता है, किन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति ही उस कविता के सार को समझकर उससे सीख ले सकता है।

इन रसों की समृद्धि को अपनाने से यह सुनिश्चित होता है कि प्रबंधन प्रथाएं मूल्यों, नैतिकता और मानवीय भावनाओं की गहरी समझ से युक्त हैं। आवश्यक है कि हम इन नवरसों में समाहित ज्ञान को समझ सकें, आत्मसात कर सकें और जीवन में उसका उपयोग करने में सक्षम हो सकें।



जीवन में समय का अभाव और बच्चों को शिक्षा देने का प्रयास



प्रवाह शुक्ल
(वित्त एवं लेखा विभाग)

यह लेख अपने गुरु देव की प्रेरणा से ही लिख पा रहा हूँ जिन्होंने सच्चा और पवित्र ज्ञान प्रदान किया उनके आशीर्वाद के बिना यह सम्भव नहीं है। जैसे सांसारिक पढ़ाई में गुरु की आवश्यकता है वैसे ही अध्यात्मिक पढ़ाई में भी सद्गुरु की अत्यधिक आवश्यकता है!

– जय श्री गुरुवे नमः

जब मैं छोटा था तब कभी नहीं सोचता था कि समय बहुत कम है और बहुत कुछ करने के लिए समय कम है। खैर..... उस समय बुद्धि भी बहुत विकसित नहीं हुई होती है। परन्तु अब जब संसार में देखो कि बहुत कुछ करने को रह गया है और परिवार भी चलाना है तो लगता है समय बहुत कम है और बहुत कुछ करने को है। बचपन में तो बस खेल-कूद और मस्ती सूझती थी कि बस आनंद आना चाहिए और हर वस्तु के लिए माता-पिता पर पूर्ण आश्रित रहना।

लेकिन अब जब मैं बड़ा हो गया, विवाह संपन्न हो गया और दो पुत्रियों का पिता भी बन गया तो जीवन में समय का बहुत अभाव लगता है और लगता है बहुत कुछ करने को रह गया। बचपन में कोई भी संसार को बहुत महत्व नहीं देता क्योंकि उसको पता होता है कि भरण-पोषण तो माता-पिता कर ही देंगे और हमें संसार से क्या लेना देना। ये कोई बहुत नई बात नहीं कह दी मैंने, ये तो हर व्यक्ति की कहानी भी हो सकती है। महत्वपूर्ण यह है कि इससे क्या सीखने को मिलता है कि पहले तो अब जो आप कर रहे हैं उसे पूर्ण उत्साह और समर्पण के साथ करने का प्रयास करें और साथ ही अपने बच्चों का जीवन बहुत आराम-दायक न कर दें। बच्चों को बताएं जीवन के बारे में और ये भी बताएं कि जो जो वस्तुएं आप उसे उपलब्ध करा रहे हैं वो कहाँ से आ रही है और इसके लिए माता-पिता कितना परिश्रम करते हैं। कई लोग यह कहते हैं कि बच्चे का बचपन मत छीनो। लेकिन मेरा कहना है यह है कि बचपन से यही सही शिक्षा और व्यवहार/शिष्टाचार आ जाएं और बच्चे जीवन को सही से समझने लगे तो बाद में समस्याएं नहीं आएंगी और आएंगी भी तो उनसे लड़ने और उबरने की कला भी विकसित हो जाएगी। साथ ही साथ बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा भी दें क्योंकि इस तनाव भरे जीवन में बिना आध्यात्म की शिक्षा के जीना कभी-कभी बहुत कठिन प्रतीत होने लगता है।



परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो अपने में अपनी भाषा में उन्नति करो।

– भारतेंदु हरिश्चन्द्र

24 दिन: जिंदगी के



डॉ. कंचन विश्वकर्मा
उद्यानिकी विभाग

टोफू... टोफू... टोफू... टोफू...टोफू... और टोफू कहीं भी होता दौड़ता चला आता, लम्बे दिन के इन्तजार के बाद शाम को पार्किंग में बड़े उत्साह और प्रेम से मिलता। सुबह 5.30 का समय था रोज की तरह मैंने पहाड़ पर चढ़ना शुरू करने ही वाली थी की मुझे कूँ... कूँ... की आवाज आई मैंने इधर उधर देखा तो छोटा सा कुत्ते का बच्चा प्यारा सा लेकिन डरा सहमा हुआ पत्थरों की आड़ में, मेरे मुँह से अनायास ही निकल गया “अरे टोफू यहाँ कैसे?” “जबकि हमारी पहली मुलाकात थी। मैं उसके करीब जाती इसके पहले दो बड़े कुत्तों ने भौंकना शुरू किया, मुझे सारा माजरा समझते देर न लगी, मैंने पहाड़ पर चढ़ने को विराम दिया और टोफू को लेकर बचते बचाते घर की तरफ भागी। टोफू अपने परिवार से बिछड़ गया था वो दुखी था। उसकी शुरुआती डाक्टररी जांच और वैक्सीनेशन आदि करवा कर उसे फिट कर दिया गया, सोचा कुछ दिनों तक अपने पास रख कर उसके परिवार की तलाश की जाएगी। दोतीन दिनों में ही वह घुल मिल गया। रोज सुबह पार्किंग तक छोड़ने आता और शाम को इन्तजार करता दिनभर बगीचे के लॉन में आराम करता और मधु मालती के फूलों के साथ खेलता और कभी कभी उन्हें खा भी लेता और दोचार फूल उठाकर अपने छोटे से घर में जमा किया करता था। टोफू बहुत खुश था, शायद वो अपने परिवार को भूलता जा रहा था। लेकिन टोफू नादान था उसे नहीं पता था कि उसकी ये खुशियाँ कितनी सीमित हैं। आज टोफू का मेरे साथ 12 वां दिन था। न जाने क्यों सुबह आया नहीं पार्किंग तक। मैंने अनदेखा किया। शाम को भी लेने नहीं आया। घर पहुँच कर आवाज लगाई लेकिन कोई प्रतिउत्तर नहीं मिला। उसके पास गई कुछ संदेह हुआ मैंने डॉक्टर को बुलाना उचित समझा। टोफू दवाई खाकर ठीक हो गया। टोफू फिर से खेलने कूदने लगा। दिन बीतने लगे लेकिन कई बार खुशियाँ बहुत सीमित हुआ करती है। टोफू एक बार फिर बीमार हो गया खाना पीना खेलना सब बंद। डॉक्टर से कहकर इस बार सारे टेस्ट करवाए रिपोर्ट जो आई उसकी उम्मीद तो क्या सोच भी नहीं सकती। डॉक्टर ने घर पर आकर कहा यह नहीं जी सकेगा इसके किडनी और लिवर दोनों ही काम नहीं करते हैं। खून ही नहीं बनता है शरीर में, सब कुछ बहुत मुश्किल है। मैंने कहा आप इलाज शुरू कीजिए देखते हैं। 9वें दिन लगातार ड्रिप और दवाइयों के सहारे टोफू की छोटी सी जिंदगी चल रही थी। उसे देखकर मैं सोचती ईश्वर ऐसा सृजन क्यों? आज टोफू की जिंदगी का 21वां दिन था बहुत कमजोर लेकिन उसकी आँखों में जीने की चाहत, मैंने उसे बहुत से मधु मालती के फूल दिए खेलने के लिए कुछ देर खेलने के बाद नकार दिया। टोफू की मासूम नजरें, सभी बातों से अनजान। उसके डॉक्टर को आना था उम्मीद थी कुछ अच्छे की थी लेकिन उसने कहा अब और उम्मीद नहीं की जा सकती इससे ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते। तुरंत मैंने दुसरे डॉक्टर को बुलाने का निर्णय लिया। बहुत उम्मीदों के साथ तो नहीं लेकिन उसने प्रयास करना शुरू किया। लेकिन टोफू के पास बहुत सीमित सांसे थी। 31 मार्च 2023 टोफू की 23वीं रात और 9 अप्रैल 24वां और आखरी दिन मेरे साथ। मैं देर रात टोफू के साथ बैठे रही उसकी सांसें धीमी होते जा रही थी उसकी मासूम नजरें लगातार मेरी तरफ देख कर मानो कह रही हों फिर मिलेंगे उसी पहाड़ी के आस पास। मुझे पहले दिन से आज 24 दिनों की सभी चीजें याद आ रही थी। कैसा डरा सहमा टोफू पहाड़ी के पास पत्थरों की ओट से मुझे देख रहा था। रात काफी हो चुकी थी टोफू की सांसे लगभग खतम होते जा रही थी। मैंने उसे उसके घर में धीरे से सुला कर उसे चादर ढँक दिया और अलविदा कह सोने चले गई। रात के कुछ घंटे ही बचे थे आँखों में नींद नहीं थी मैं सुबह का इन्तजार कर रही थी। सुबह होते ही मैंने सब कुछ बहुत शांत महसूस किया, मधु मालती के ढेरों फूल गिरे हुए थे पर उनके साथ खेलने वाला अब नहीं था। मैं सोचती रही टोफू और उसकी छोटी सी जिंदगी। मैंने उसे जहाँ रखा है, वहाँ मधु मालती का ही पेड़ लगाया इस उम्मीद में की जब मधु मालती खिलेगी और महकेगी तो टोफू फिर से उसके फूलों के साथ खेलता नजर आएगा।



कुछ लोग



अन्विका दास
पुत्री श्री अजय दास,

कुछ लोग थे,
जिन्होंने मेरा अतीत बनाया,
जिन्होंने कभी परवाह ही नहीं की,
कौन समझा कि मैं मूर्ख था,
पर, आज मैं सीधा खड़ा सक्षम हूँ!!

कुछ लोग थे,
जिन्होंने मुझे एहसास दिलाया,
कि मैं कैसी आत्मा हूँ,
जो हमेशा मेरे लिए रहेगा,
मेरे साथ सदा के लिए!!

कुछ लोग थे,
जिन्होंने मुझे निष्कासित कर दिया,
अपने नवजीवन के लिए, जो उन्हें मिला,
जो मेरे दर्द में कभी नहीं रोये
इसके बाद!!

कुछ लोग थे,
जो मुझे अच्छे से समझते थे,
और मुझे सिखाया,
कि स्वयं को भी प्यार करो,
और मेरी एक इच्छा है,
कि वे मेरे साथ रहें,
सदा के लिए!!



काश ऐसा होता



भूमिका शर्मा
पुत्री श्री हेमेन्द्र शर्मा

अगर पेड़ भी चलते होते,
कितने मजे हमारे होते,
बाँध तने में उसके रस्सी,
चाहे जहाँ कहीं ले जाते,

जहाँ कहीं भी धूप सताती,
उसके नीचे झट सुस्ताते,
जहाँ कहीं वर्षा हो जाती,
उसके नीचे हम छिप जाते,

लगती जब भी भूख अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते,
आता कीचड़ बाढ़ कहीं तो,
झट उसके ऊपर चढ़ जाते,

अगर पेड़ भी चलते होते,
कितने मजे हमारे होते,



हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।

— राजगोपालाचारी

बच्चों के साथ तरौताजा जीवन



श्रीमती सीमा शर्मा
पत्नी श्री हेमेन्द्र शर्मा

बच्चों का पालन – पोषण करते समय आपको जो सबसे पहला काम करना है वह यह कि आप अपने बच्चों को बदलने की कोशिश न करें, हाँ इस बात की पूरी संभावना है कि आपका बच्चा अनेक दूसरे विषाक्त दिमागों के प्रभाव में आ सकता है, क्योंकि दुनिया में ऐसे दिमाग सभी जगह होते हैं। आप उसे पूरी तरह से अलग नहीं कर सकते हैं। अब आप पूछते हैं मुझे क्या करना चाहिए? मेरे बच्चे की शिक्षा कैसी होनी चाहिए? आप उसे बुद्धिमान, जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित कीजिये। अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिए हर प्राणी को आवश्यक बुद्धि दी गई है। एक चींटी पैदा होती है। आप उसका अध्ययन कीजिये। चींटी में आप जो कुछ देखते हैं वह सब करने की योग्यता भले ही न हो पर एक चींटी का जीवन जीने के लिए आवश्यक बुद्धि मौजूद है। यही बात सभी जीवों पर लागू होती है। भरपूर जीवन जीने के लिए आप भी आवश्यक बुद्धि रखते हैं। अब समस्या यह है की आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की बुद्धि आपकी बुद्धि के अनुरूप हो, उसके अपने तरह की नहीं। हर बच्चे में भरपूर जीवन जीने के लिए आवश्यक बुद्धि होती है। आप उसके लिए ऐसा वातावरण बनाएं जिसमें उसकी अपनी बुद्धि विकसित हो। जहाँ तक उसे प्रभावित करने की बात है, उसके अध्यापकों की एक भूमिका होगी, उसके मित्र, समाज के दूसरे लोग उस पर थोड़ा प्रभाव डालेंगे। आप उसे नहीं रोक सकते। फिर भी माता-पिता के रूप में अपने बच्चे की बुद्धि के विकास के लिए एक उचित माहौल पैदा करने में आप बहुत अहम भूमिका निभा सकते हैं। सबसे पहले अगर आप ऐसा सोचते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तब ही उसे सिखाने का वक्त होता है तो आप बच्चे को बर्बाद कर देंगे। जब एक बच्चा आपके जीवन में आता है तब वह आपके सीखने का वक्त होता है, क्योंकि अपने जीवन में आप बहुत कुछ चूक गए हैं, अब एक शिशु जीवन की ओर देख रहा है। आप उसके पास बैठकर जीवन को एक नये नजरिए से देखें। अपने बच्चे के लिए आप इतना कर सकते हैं कि उसे अपना प्रेम और सहारा दीजिए, फिर उसकी बुद्धि विकसित होगी। बस इतना ही करना है।

उसके लिए ऐसा प्रेममय वातावरण बनाइये कि उसकी बुद्धि स्वाभाविक रूप से प्रखर हो जाए। लोग समझते हैं कि प्यार से बच्चे को पालने का मतलब है कि जो भी वह माँगे उसे दे दिया जाए यह निपट मूर्खता है। उसे जैसी भी परिस्थिति में रखा जाए उसमें आनंद में रहने की योग्यता होनी चाहिए। यदि आप बच्चे की परवरिश अच्छी तरह से करना चाहते हैं तो पहली बात यह है कि आप खुश रहें।



हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

— डॉ. अमरनाथ झा

एक बचपन का जमाना था



हेमेन्द्र शर्मा

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था,
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर तितली का दीवाना था,
खबर न थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था,
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था,
माँ की कहानी थी,
परियों का फसाना था,
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था,
हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था,
रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था।



मैं बात कहती हूँ



आयुषी जैन

बात कहती हूँ मैं पेटेन्ट, ठीक है सेन्ट परसेन्ट।
दुनिया में कोई न रहा परमानेन्ट,
जिसने जमाई धाक उसके उड़ गए टेन्ट।
मौत का वारन्ट लिए खड़ा हैं सार्जेन्ट,
जाना ही पड़ेगा हुक्म है अर्जेन्ट।
बादशाह शंहशाह कोई नहीं लेफिटनेन्ट,
धनी निर्धन ही नहीं रही गवर्नमेन्ट।
इसलिए धर्म के काम में रहो सदा प्रेजेन्ट,
दीन दुखियों के दर्द में मत रहो अपसेन्ट।
मत सजाओं जड़-वस्तु का केन्ट,
मत लगाओं विषय कसाय का सेन्ट।
भलाई बुराई का कर्म देते हैं जजमेन्ट,
पुण्य, पाप के फल में होता है पेमेन्ट।
स्वास्थ्य ठीक रखोगे कभी ना होंगे पेशेन्ट,
पाओगे आराम अगर न हो एक्सीडेंट।
जब तक न लगे मौत का करेन्ट,
स्वात्म हित करो लेडीज़ एंड जेन्ट।
समझ लो अमीर-गरीब व मास्टर स्टूडेन्ट,
कर्मचारी प्रेसिडेन्ट एण्ड सर्वेन्ट।
बन जाओ मोक्षपुरी के एजेन्ट,
कर रही है भगवान प्रभु की पार्लियामेन्ट,
पार्लियामेन्ट पार्लियामेन्ट पार्लियामेन्ट।



जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

— डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हिंदी भाषा



सोनिया चौहान
वित्त एवं लेखा विभाग

प्रकृति की पहली ध्वनि है
मेरी हिन्दी भाषा भी इसी की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई
हिंदी ही है इन सबकी जननी।
प्रकृति की हर इक चीज अपने में संपूर्ण है
मेरी हिंदी भाषा भी अपने में संपूर्ण है।
जो बोलते हैं वही लिखते हैं,
मन के भाव सही उभरते हैं।
हिंदी भाषा ही तुम्हें, प्रकृति के समीप ले जाएगी,
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी।
कुछ हवा चली है ऐसी यहां
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो।
बदल सको क्या तुम अपनी माता को?
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो।
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो



‘यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है’।

— लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

आईआईएम इंदौर परिसर में सुबह की सैर का आकर्षण



डी. काशी विश्वनाथ रेड्डी
मुख्य अधिकारी इंजीनियरिंग

दिनांक 29.5.23 को मैंने लगभग 6 बजे अपनी सुबह की सैर शुरू की। जैसे ही मैं अपने फ्लैट डी 1 से बाहर निकला, संकाय अपार्टमेंट से, मैं रात भर की बारिश के समागम को देख सकता था। मैंने अपार्टमेंट के सामने सुरक्षाकर्मियों से रात भर हुई बारिश के बारे में पुछा, और उन्होंने पुष्टि की कि लगभग आधी रात को तेज आंधी के साथ भारी बारिश हुई थी।

जैसे ही मैंने पहाड़ी की चोटी की ओर जाने वाली सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया, मैंने देखा कि लाल गुलमोहर के फूल जिन पर पीले निशान भी बने हुए थे एक काली सर्पाकार सड़क को एक मनोरम दृश्य से सजा रहे थे। हवा ठंडी चल रही थी। हर रोज की तरह मैं ब्लू टूथ हेडफोन चालू करने ही वाला था कि, मेरी आंखों के सामने की सुंदरता देख मैंने यह सब छोड़ दिया। मैंने चारों ओर प्रकृति का आनंद लेते हुए चलना जारी रखा। मैं देख सकता था कि पेड़ों की कुछ शाखाएं सड़क पर गिर गई हैं। मैंने गिरे हुए पेड़ की शाखाओं को हटाने के लिए मोटर साइकिल से जा रहे एक राहगीर से मदद ली। शाखाओं को हटाने के दौरान मैं एक बच्चे की तरह महसूस कर रहा था जो भारी बारिश के बाद सड़क पर पहली बार निकलने का आनंद ले रहा हो। प्रकृति सभी गिरे हुए फूलों के साथ अपनी सुंदरता में ओतप्रोत थी और बारिश बारिश की बूंदों के निशान हर जगह देखे जा सकते थे।

जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया मुझे समझ आया कि सुबह की शिफ्ट में आने वाले सफाईकर्मियों ने पहले से ही रास्ता साफ करते हुए गिरी हुई शाखाओं को साफ कर दिया था। जैसे ही मैं ईआर-2 के पास पहुंचा, मैंने वहां कुछ गिरे हुए आंवले भी दिखाई दिए। मेरा बचपन तुरंत ही ताजा हो गया। मैंने तुरंत ही कुछ फल एकत्र कर लिए। जैसे ही मैं मंदिर की सड़क पर आगे बढ़ा, मैंने देखा कि बहुत सारे 'पंख वाले दीमक' चारों ओर उड़ रहे हैं। ये कीट इस मौसम में पहली बारिश के बाद नए घोंसला बनाने के लिए पलायन कर जाते हैं। यह अन्य पक्षियों के पसंदीदा भोजन भी हैं। मैं मोरों को इन दीमकों का पीछा करते हुए आनंद ले रहा था। खास बात यह है कि ये पंख वाले दीमक ज्यादा ऊंचा नहीं उड़ पाते हैं, वे बस नए स्थानों की तलाश में ईधर-उधर मिट्टी पर उड़ने और उतरने की कोशिश करते हैं। मुझे याद आया कि जब मैं छोटा था तो मैं इन्हें अपने खेतों में देखता था। मैंने खूबसूरत मोरों को दीमक का शिकार करते हुए वीडियो बनाने की कोशिश की, लेकिन वे इतनी तेजी से ढलान पर चले गए कि मैंने सोचा मैं उन्हें उनके भोजन का आनंद लेने के लिए अकेला छोड़ देता हूँ।

मैं बारिश के बाद मनोरम परिसर का आनंद लेते हुए आस-पास दिखने वाले सभी पक्षियों और जीवों की सुंदरता का आनंद लेते हुए मैं गिरी हुई हरी पत्तियों और फूलों पर अपने कदम रखते हुए इस सड़क पर चलता रहा। सड़क जहां खत्म होती है वहां एक गोल घेरा है। उसी सड़क से लौटते समय, मैंने एक मृत गिलहरी और एक जीवित गिलहरी को देखा जो उसे जगाने की कोशिश कर रही थी। तुरंत ही मैं समझ गया कि कल की तबाही का हादसा था। इसने मुझे भगवत् – गीता के श्लोक की याद दिला दी।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति

मेरे मन में विचार आया कि अब तो भगवान ही हे जो उस नन्ही सी गिलहरी को उसके साथी को उसके बिना जीने की हिम्मत दे। मैंने मंदिर के पास खड़े सुरक्षाकर्मी को बुलाया ताकि वह उस मृत गिलहरी को उचित तरीके से दफना दे। जैसे ही मैं जीवन और उसके नाटकों के बारे में सोचते हुए सड़क पर बढता चला गया, मैंने दो संकाय सदस्यों को विपरीत दिशा में जाते हुए देखा। हमने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं और उत्साहित हो कर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे चारों ओर उड़ने वाले कीड़ों के बारे में कुछ जानते हैं। इससे पहले कि वे जवाब दें, मैंने उन्हें बताया कि वे पंख वाले दीमक हैं और पक्षियों के पसंदीदा भोजन हैं। मैंने उन्हें बताया कि न केवल पक्षी, बल्कि वे उच्च प्रोटीन युक्त होते हैं और इसलिए मनुष्यों द्वारा भी उपभोग किए जाते हैं। वे ये जानकर बहुत आश्चर्यचकित हुए।

जैसे ही मैं आगे बढ़ा अपनी सुबह की सैर पूरी करने के लिए, मुझे याद आ रहा था कि बचपन के दिनों में ये कीट हमारे क्षेत्र में मानव उपभोग के लिए एक विशिष्ट तरीके से तले जाते थे और भोजन में पेश किये जाते थे। मुझे महसूस होता है कि यह जानकारी मेरी पीढ़ी के साथ समाप्त हो रही है। वर्तमान पीढ़ी इस पर कभी विश्वास नहीं करेगी, लेकिन अगर कोई पश्चिमी राष्ट्र यही उनके भोजन में पेश करते हैं, तो हम उनका अनुसरण करने की कोशिश करेंगे। मैं समझता हूँ कि हमारा समाज इस तरह से बन गया है, कि हम हमारे रीति-रिवाजों के माध्यम से हमारे स्थानीय ज्ञान को खो रहे हैं।

आगे बढ़ते, मैंने खुले लॉन में बहुत सारे कबूतरों को इन कीड़ों पर दावत करते हुए देखा। यह एक सुंदर दृश्य था। हमारे परिसर में प्रकृति की सुंदरता ने मुझे आज बहुत सारी भावनाओं से ओतप्रोत कर दिया। मेरे लिए यह जीने का और आप पाठकों से ज्ञान साझा करने का एक नया अनुभव था। मेरी सुबह की सैर 7 बजे तक समाप्त हुई। जब मैं अपने फ्लैट पर पहुंचा, लेकिन आज की सैर की स्मृतियाँ हमेशा मेरे मस्तिष्क और मन में समाहित रहेगी।



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

— मैथिलीशरण गुप्त

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।

—आचार्य विनोबा भावे

26 जनवरी 2023 गणतंत्र दिवस



2023 हिंदी दिवस का भव्य आयोजन, ज्ञान शिखर 2022 विमोचन पुरस्कार वितरण



2023 हिंदी दिवस का भव्य आयोजन, ज्ञान शिखर 2022 विमोचन पुरस्कार वितरण



2023 हिंदी दिवस का भव्य आयोजन, ज्ञान शिखर 2022 विमोचन पुरस्कार वितरण



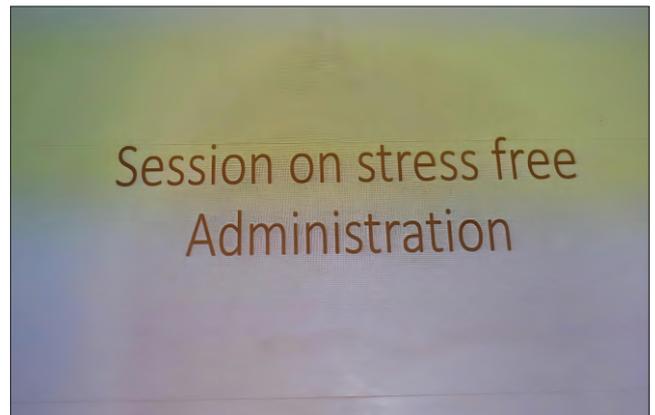
उत्कृष्टता केंद्र अन्वेषण का शुभारंभ 7 जुलाई 2023



उल्लास सांस्कृतिक कार्यक्रम 06 जून 2023 का आयोजन



तनाव मुक्त प्रशासन पर एक सत्र 5 मई 2022



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 22 अप्रैल 2023 श्री राजेश श्रीवास्तव द्वारा कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान



विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की कुछ झलकियां



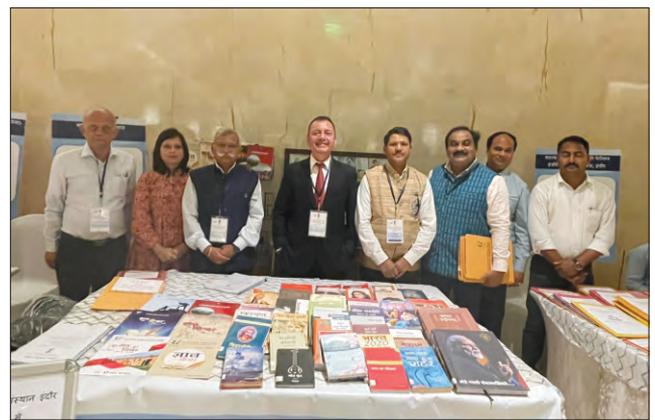
संविधान दिवस शपथ ग्रहण 26 दिसंबर 2022



गाँधी जयन्ती आयोजन 2022



संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति की निरीक्षण बैठक



24वां वार्षिक दीक्षांत समारोह 2023



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



संस्थान में संस्कृत एवं तमिल कक्षाओं का संचालन





सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

प्रबंध शिखर, राऊ – पीथमपुर रोड़, इंदौर – 453556 (म.प्र.) भारत

फोन : +91 731 2439666, फैक्स : +91 731 2439800

www.iimidr.ac.in